International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 8, Issue 06, June 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापक अध्यापिकाओं के व्यक्तिशील गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 बीना कुमारी
(एसोसिएट प्रोफेसर)
शिक्षक–शिक्षा विभाग,
धर्म समाज कॉलिज, अलीगढ़

प्रस्तावनाः–

आज मनुष्य के समक्ष जिस प्रकार की विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रह हैं उनके परिणाम स्वरूप मानव मानवीय मूल्यों से दूरी पाशविकता की ओर गमन कर रहा है। आज हमारी प्रत्येक सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ भ्रष्ट मूल्यों पर अपना जीवन–यापन कर रही हैं। हमारे समाज में नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय मूल्यों, धार्मिक मूल्यों आदि का ह्रास हो रहा है तथा अनैतिक विध्वंसक, व्यक्तित्व एवं पदार्थवादी दृष्टिकोण का विकास हो रहा है यदि समय रहते इसका उपयुक्त उपचार न किया गया तो स्थिति अत्यधिक गम्भीर हो जायेगी। अतः इस स्थिति की रोकथाम के लिए समाज की सबसे लचीली, महत्वपूर्ण एवं गत्यात्मक कड़ी अध्यापक वर्ग के व्यक्तित्वशीलगुणों के विकास पर ध्यान देना होगा। क्योंकि अध्यापक–वर्ग सर्वाधिक लचीले एवं संवेदनशील होते हैं तथा इन पर देश के भावी कर्णधारों के निर्माण का भार होता है और यह विद्यार्थियों को उचित दिशा प्रदान कर उचित परिवेश देकर एवं अन्य अनुकूल तथा प्रभावपूर्ण कदम उठाकर उनको सही मार्ग पर अग्रसर कराने में सहयोग प्रदान करते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकायें बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं जो बालक–बालिकाओं को एक आदर्श वातावरण प्रदान कर उनके सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

अध्ययन के उद्देश्यः–

प्रस्तुत लघु शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रतिपादित किया गया है–

1. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित सम्पूर्ण अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्वशीलगुणों का अध्ययन करना।
2. प्रशिक्षित अध्यापकों के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन करना।
3. अप्रिशिक्षित अध्यापकों के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन करना।
4. प्रशिक्षित अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन करना।
5. अप्रिशिक्षित अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्यन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऐंः–

प्रस्तुत लघु शोध कार्य निम्नलिखित परिकल्पना के व्यवस्थापन एवं पुष्टि हेतु प्रतिपादित किया गया है–

1. प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित सम्पूर्ण अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नही होता है।
2. प्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. अप्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नही होता है।
4. प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित अध्यापकों के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नहीं होता हैं।

जनसंख्या एवं न्यादर्श विधियाँः–

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या अलीगढ़ जिले के प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकायें हैं।

उपरोक्त जनसंख्या में से न्यादर्श का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में संभाव्य न्यादर्श के अन्तर्गत यादृच्छीकरण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के चयन के समय अधिक दृष्टिगत रखा गया हैं चुने गये न्यादर्श का अन्य विवरण निम्नलिखित है–

1. अलीगढ़ जिले के अध्यापक–अध्यापिकाओं को चुना गया है।

2. अध्यापक–अध्यापिकाऐं केवल शहरी हैं।

3. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं को चुना गया है।

4. न्यादर्श में अध्यापक–अध्यापिकाओं की कुल संख्या 100 है। न्यादर्श के विवरण को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया गया है।

क्षेत्र	प्रशिक्षित		अप्रिशिक्षित		योग
लिंग	अध्यापक	अध्यापिकायें	अध्यापक	अध्यापिकायें	योग
योग	25	25	25	25	100

जनसंख्या एवं न्यादर्श विधियाँः–

प्रस्तुत अध्ययन में स्वतंत्र चरों, आश्रित चरों एवं मध्यवर्ती चरों का वर्णन निम्नलिखित है–

संस्थाओं का चयनः–

प्रस्तुत लघु शोध कार्य के लिए अलीगढ़ जनपद के रघुवीर बाल मन्दिर, सरस्वती विद्या मन्दिर, रघुवीर सहाय इण्टर कॉलिज, महेश्वरी इण्टर कॉलिज, गगन पब्लिक स्कूल, जी0डी0 पब्लिक स्कूल और बारहसैनी इण्टर कॉलेज के अध्यापक–अध्यापिकाओं का चयन किया गया। इन शैक्षिक संस्थाओं से केवल हिन्दू धर्म के अध्यापक–अध्यापिकाओं का ही चयन किया गया। जिससे लघु–शोध कार्य के लिये उपयुक्त प्रदत्तों का संकलन किया जा सके। इस सम्बन्ध में शैक्षिक संस्थाओं के प्रधानाचार्य एवं प्रधानाचार्या से सम्पर्क किया गया।

अध्ययन सामग्रीः–

किसी भी शोध कार्य के लिये उपयुक्त प्रदत्तों व संकलन करने` लिए यह आवश्यक है कि इसके लिये उन अध्ययन सामग्रियों का प्रयोग किया जाये जिनकी वैधता, विश्वसनीयता तथा उनका वस्तुगत स्वरूप प्रत्येक दृष्टि से संदेह से परे हो। ऐसी स्थिति में वर्तमान लघु शोध कार्य के लिए जिस अध्ययन सामग्री का प्रयोग किया गया हैं उनका विवरण निम्न है–

व्यक्तित्व प्रश्नावलीः–

प्रस्तुत प्रश्नावली का निर्माण डॉ0 आर0पी0 सिंह द्वारा किया गया है। प्रयुक्त व्यक्तित्व प्रश्नावली को एक उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण मान के रूप में विकसित किया गया है। जिसके द्वारा व्यक्तित्व के 12 महत्वपूर्ण पक्षों पर मापन किया जाता हैं यह प्रश्नावली 13 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी स्त्री–पुरूषों के लिए प्रयुक्त की जाती है। इस प्रश्नावली में कुल 120 पदों को एक निश्चित क्रम में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक शीलगुण के लिए 10 पदों को रखा गया है। जिससे फलांकन करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा उन सभी की इसमें रूचि बनी रहे जो इसका प्रयोग व्यक्तित्वशील गुणों के अध्ययन के लिए करते हैं।

प्रदत्तों का संकलन

सर्वेक्षणात्मक अनुसंधान कार्यों मे प्रदत्तों का संकलन एवं विवेचन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आधारभूत तत्व होता हैं आँकड़ों को ठीक प्रकार से एकत्रित करके उनको क्रमबद्ध तरीके से संयोजित करने के बाद ही प्रदत्तों की संज्ञा दी जाती हैं प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन एवं विश्लेषण में विशेष सावधानी बरती गयी।

प्रदत्तों का संकलनः–

सर्वप्रथम अध्ययन के लिए डॉ0 आर0पी0 सिंह द्वारा निर्मित व्यक्तित्व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इसके उपरान्त निर्मित व्यक्तित्व प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इसके उपरान्त अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्वशीलगुणों का अध्ययन करने के लिए प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित

अध्यापक–अध्यापिकाओं का चयन किया गया। सर्वप्रथम प्रशिक्षित अध्यापक व अध्यापिकाओं को प्रश्नावली बांट दी। जिनकी आयु 20–35 वर्ष के बीच थी। प्रश्नावली को भरने से पूर्व कुद आवश्यक निर्देश दिये गये तथा अन्य सावधानियां बरती गयीं। परीक्षण प्रपत्र पूर्ण भरने के उपरान्त प्रश्नावली वापिस ले ली गयी जो कि भरी हई थी। इसी प्रकार अप्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं पर उपरोक्त प्रक्रिया दोहरायी गयी। सभी प्रश्नावलियों को एकत्रित करके उनका फलांकन किया गया।

फलांकन प्रक्रियाः–

प्रत्येक प्रश्नावली का फलांकन तालिका के आधार पर किया गया। प्रत्येक प्रश्नावली में 120 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर सही उत्तर के लिए एक अंक दिया गया तथा गलत उत्तर के लिए शून्य (0) अंक प्रदान किया गया। क्योंकि प्रत्येक शीलगुणों के लिए 10 प्रश्न निर्धारित है। अतः एक गुण के लिए अधिकतम 10 अंक हुए। एक अध्यापक/अध्यापिका एक शीलगुण में जितने अंक प्राप्त करता है/करती है। तो उसे उस विशेष शीलगुण के सामने लिख दिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक शीलगुण के लिए अलग–अलग अंक प्रदान कर आँकडे प्राप्त किये हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्याः–

प्रस्तुत लघु शोध कार्य को विभिनन समूहों के बीच अन्तर की सार्थकता को ज्ञात करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, एस0ई0डी0 एवं टी–मूल्य की गणना की गयी।

प्रदत्तों के विश्लेषण में यह स्पष्ट करना उचित है कि इसमें उच्च अंक व्यक्तित्व शीलगुण के धनात्मक स्वरूप को व्यक्त करते हैं जबकि कम अंक ऋणात्मक स्वरूप को व्यक्त करते हैं।

सर्वप्रथम प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शील गुणों का मध्यमान, मानक–विचलन, एस0ई0डी0 तथा टी–मूल्य को तालिका 4.1 में प्रस्तुत किया गया है।

क्रम		अप्रिशिक्षित अध्यापक			अप्रशिक्षित अध्यापिकायें			एस0ई0डी0	टी0मूल्य	सार्थकता स्तर
		संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन			
1	सत्य	25	5.76	1.39	25	5.56	1.47	0.40	0.50	एन.एस.
2	अहिंसा	25	5.40	1.69	25	5.88	1.14	0.40	1.20	एन.एस.
3	ब्रह्मचर्य	25	4.96	1.82	25	5.64	1.43	0.46	1.47	एन.एस.
4	अपरिग्रह	25	5.36	1.52	25	4.80	1.57	0.43	1.30	एन.एस.
5	अस्तेय	25	5.20	1.72	25	4.76	1.55	0.46	0.95	एन.एस.
6	शौच	25	5.84	1.71	25	5.84	.088	0.38	0.00	एन.एस.
7	संतोष	25	5.88	1.98	25	5.32	.169	0.52	1.07	एन.एस.
8	तप	25	5.28	1.56	25	6.16	1.12	0.38	2.31	X
9	स्वाध्याय	25	5.92	1.17	25	6.12	1.10	0.32	0.62	एन.एस.
10	ईश्वर प्राणिधान	25	5.60	1.89	25	6.08	1.83	0.52	0.92	एन.एस.
11	बुद्धि	25	6.72	1.18	25	5.04	1.42	0.36	4.66	XX
12	धैर्य	25	6.16	1.18	25	6.12	1.21	0.33	0.12	एन.एस.

व्याख्या विश्लेषण एवं विवेचन

सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर अनुसंधानकर्ती को जो परिणाम प्राप्त हुए उनका विवरण निम्नलिखित है–

1. प्रथम विराकरणीय परिकल्पना है कि–

प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित सम्पूर्ण अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्वशील गुणों में सार्थक अन्तर नही होता है।

शोधकर्ती ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व के 12 शीलगुणों में से सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय, तप, स्वाध्य एवं धैर्य में इन दोनों समूहों के मध्यमानो का अन्तर .05 स्तर पर भी सार्थक

नहीं है तथा बुद्धि में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है तथा शौच, सनतोष एवं ईश्वर प्राणिधन में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः इन परिणामों के आधार पर हम निराकरणीय परिकल्पना को स्वीकार कर सकते हैं।

2. हमारी द्वितीय निराकरणीय परिकल्पना है किः–

प्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अनतर नहीं होता हैं।

शोधकर्ती ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व के 12 शीलगुणों मे से तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान एवं बुद्धि में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अनतर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है तथा शौच एवं सन्तोष में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है। जबकि सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय एवं धैर्य में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः इन परिणामों के आधार पर हम निराकरणीय परिकल्पना को अस्वीकार कर सकते हैं।

3. हमारी तृतीय निराकरणीय परिकल्पना है किः–

अप्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नही होता है।

शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में पाया कि 12 शीलगुणों में से सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अस्तेय, शौच, सन्तोष, स्वाध्याय, ईश्वर प्राणिधान एवं धैर्य में इन दोनों समूहों के मध्यमानें का अन्तर .05 स्तर पर भी सार्थक नही है तथा तप में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है तथा बुद्धि में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः इन परिणामों के आधार पर हम निराकरणीय परिकल्पना को स्वीकार कर सकते हैं।

4. हमारी चतुर्थ निराकरणीय परिकल्पना है किः–

प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापकों के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नही होता हैं

शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व के 12 शीलगुण्हों मे से सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, शौच, तप, स्वाध्याय एवं बुद्धि में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है तथा

अपरिग्रह एवं संतोष में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है तथा अहिंसा, ईश्वर–प्राणिधान एवं धैर्य में इन दोनों समूहों के आधार पर हम निराकरणीय परिकल्पना को स्वीकार कर सकते हैं।

5. हमारी पंचम निराकरणीय परिकल्पना है किः–

प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित अध्यापिकाओं के व्यक्तित्व शीलगुणों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में पाया कि व्यक्तित्व के 12 शीलगुणों मे ंसे अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, सन्तोष, स्वाध्याय एवं धैर्य में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अंतर .05 स्तर पर भी सार्कि नहीं है तथा सत्य एवं तप में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है तथा ब्रह्मचर्य, शौच ईश्वर–प्राणिधान एवं बुद्धि में इन दोनों समूहों के मध्यमानों का अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः इन परिणामों के आधार पर हम निराकरणीय परिकल्पना को ना तो स्वीकार कर सकते हैं और ना ही अस्वीकार कर सकते हैं।

भविष्य में सम्भावित अन्य शोध कार्यः–

1. विभिनन बौद्धिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन।

2. उच्च, मध्य एवं निम्न आय वर्गों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन।

3. विभिनन कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्वशीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

4. विभिनन व्यवसायों से सम्बन्धित छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

5. हिन्दी एवं अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्वशील गुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

6. शिक्षित एवं अशिक्षित पुरूषें एवं महिलाओं के व्यक्तित्वशील गुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

7. विभिन्न जातियों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व शीलगुणों का अध्ययन।

8. स्वच्छ एवं मलिन बस्तियों में रहने वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्वशील गुणेां का तुलनात्मक अध्ययन।

9. पहाडी, मैदानी एवं तराई क्षेत्रों में रहने वाले छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्वशीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

10. विवाहित एवं अविवाहित लडके एवं लडकियों के व्यक्तित्व शीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

11. विभिन्न संस्कृतियों के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्वशीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

12. महिला एवं पुरूष अध्यापकों के व्यक्तित्व शीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

13. तकनीकी एवं अतकनीकी छात्रों के व्यक्तित्वशीलगुणों का अध्ययन।

14. सामान्य बालकों एवं बाल अपराधी बालकों के व्यक्तित्व शीलगुणों का तुलनात्मक अध्ययन।

परिसीमायेंः–

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध की परिसीमायें निम्नलिखित हैं–

1. प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में केवल प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं के व्यक्तित्वशील गुणों का अध्ययन किया गया है।

2. इस लघु शोध प्रबन्ध में केवल शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं को चुना गया है।

3. प्रस्तुत लघु शोध में केवल अलीगढ़ जनपद के अध्यापक–अध्यापिकाओं को चुना गया है।

4. प्रस्तुत लघु शोध में केवल 100 अध्यापक–अध्यापिकाओं को चुना गया है।

5. प्रस्तुत लघु शोध में केवल 20 से 35 वर्ष के अध्यापक–अध्यापिकाओं को चुना गया है।

6. प्रस्तुत अध्ययन में केवल हिन्दू धर्म के अध्यापक–अध्यापिकाओं का चयन किया गया है।

7. प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में केवल जूनियर विद्यालयों में पढ़ाने वाले प्रशिक्षित एवं अप्रिशिक्षित अध्यापक–अध्यापिकाओं को रखा गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अरनाल्ड एवं अन्य 1991ः– एजूकेशन रिसचर्य 1991, वोल्यूम– 33, नं0 3, पृष्ठ 223–228।
2. आइजनेक एवं अन्य 1972ः– इसाइक्लोपीडिया ऑफ साइकोलॉजी, लन्दन।
3. आलपोर्ट, जी0डब्ल्यू0 1961ः– पर्सनेलिटी ए साइकोलॉजीकल इण्टर प्रिटेशन हाल्ट–न्यूयार्क, अमेरिका।
4. कोलमैन जेम्स सी0 1976ः– एवनार्मल साइकोलॉजी एण्ड मॉर्डन लाइफ, पंचम संस्करण, तारापुर वाला एण्ड सनस कम्पनी।
5. गिलफोर्ड, जे0पी0 1965ः– जनरल साइकोलॉजी, न्यूयार्क।
6. गैरिट, एच0ई0 1970ः– टेटिस्टिक इन साइकोलॉजी एवं एजूकेशन।
7. चटर्जी, वी0पी0 सिंह, एस0एस0 एवं सिंह आर0पी0 1974ः– डवलपमेन्ट नार्मस प्रोजेक्ट गांधीयन इन्सटीटयूट ऑफ स्टडी राजधाट वाराणसी।
8. पुष्पलता 1992ः– जर्नल ऑफ पर्सनेलिटी एण्ड क्लीनीकल स्टडीज 1992, वोल्यूम–8 नं0 1, ए एसोएिशन ऑफ क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट, नई दिल्ली।
9. पाठक, पी0डी0 1982 :– शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
10. ब्रूटा, अरूणा एवं अन्य 1992ः– जर्नल ऑफ पर्सनॉलिटी एण्ड क्लीनिकल स्टडीज साइकोलोजिस्ट्स, नई दिल्ली।
11. भार्गव, महेश 1996ः– आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, हरप्रसाद भार्गव, आगरा।
12. भटनागर पारसनाथरायः– अनुसंधान परिचय, चतुर्थ संस्करण, आगरा।
13. भटनागर, सुरेश (2000) शिक्षा मनोविज्ञान, आर0लाल बुक डिपो, मेरठ।
14. माथुर, एस0एस0ः– शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
15. राधेश्याम एवं अन्य 1992ः– जर्नल ऑफ पर्सनॉलिटी एण्ड क्लीनिकल स्टडीज। वोल्यूम–8, नं0–2
16. रो एस0एन0 1967ः– स्टॅडेन्ट्स परफोरमेन्स इन रिलेशन टू सम आस्पेक्ट्स ऑफ पर्सनॉलिटी एण्ड एकेडेमिक एचीवमेन्ट। वोल्यूम–2 दिल्ली।
17. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी0एन0 1984ः– बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास। तृतीय संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

18. श्रीवासतव, डी0एन0 1990:– असामान्य मनोविज्ञान। साहित्य प्रकाशन, आगरा।

19. श्रीवास्तव, ज्ञानचन्द प्रकाशः– शिक्षा मनोविज्ञानः नवीन विचारधाराएं कांसेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली (2002)

20. सर्वेस एवं अन्य 1977:– पर्सनेलिटी एण्ड एडजस्टमेन्ट इन द एण्ड न्यूयार्क एकेडेमिक प्रेस,

21. सिंह, अरूण कुमार (2005):– शिक्षा मनोविज्ञान, भारतीय भवन पब्लिशर्स, पटना

22. सिंह, आर0पी0 एवं कुमार, देवेन्द्र (2000):– व्यक्तित्व का मनोविज्ञान। प्रकाशन–शोध सुमन प्रकाशन, अलीगढ़।

23. सिंह, लाभ एवं तिवारी, गोविन्द (1978):– असामान्य मनेाविज्ञान के मूल आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

24. त्रिपाठी, जे0जी0 1995:– मनोविज्ञान अनुसंधान पद्धतियाँ। प्रकाशक विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

25. त्रिपाठी जे0जी0, 1996:– असामान्य मनोविज्ञान, प्रकाशक–भार्गव बुक हाउस, आगरा।